

भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र स्तरीय जन अभियान

पार्श्वभूमि, उद्देश एवं सुझावित
गतिविधियाँ

National level Jan Abhiyan on Bhumi Suposhan and Samrakshan

Background, Objective and
Proposed Programmes

भारतीय कृषि

Bhartiya Krishi

- भारतीय कृषि का अस्तित्व ९००० वर्षों से अधिक है।
- भारतीय कृषि स्थानिक प्राकृतिक संसाधन और पारिस्थितिकी में स्थापित है।
- स्थानीय प्राकृतिक संसाधन (पानी, सूक्ष्म जीव, गोबर इत्यादि) के गुणात्मक और मात्रात्मक व्यवस्थापन से कृषि उत्पादन और उत्पादकता बनाए रखना यह भारतीय कृषि की विशेषता है।
- भूमि हमारी माता है।
- भूमि का पोषण करना है, शोषण नहीं।

- Bhartiya Krishi is in existence for over 9000 years.
- Strongly rooted in local ecology and natural resources.
- Characterized by maintaining agricultural production and productivity through qualitative and quantitative management of local natural resources.
- Bhumi is our Mother Earth.
- Our aim is Bhumi Suposhan, not to exploit her.

- ऋग्वेद – श्री सूक्त (इसवी पूर्व १५००)

- ‘...गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
...’

- अथर्ववेद - भूमि सूक्त (इसवी पूर्व १०००)

- ‘.....माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः.....’
॥१२॥

- कृषि पाराशर परम्परा (इसवी पूर्व ४००)

- वृक्षायुर्वेद (इसवी १० वी सदी)

- Rigved – Shree Sukta (1500 BC)

- ‘...gandhadvArAm durAdharShAm
nityapuShTAm karIShiNIIm| IshvarIm
sarvabhUtAnAm tAmihopahvaye shriyam
|| 9 ||...’

- Atharvaved – Bhumi Sukta (1000 BC)

- ‘..... Maataa Bhuumih Putro Aham
Prthivyaah.....’ || 12 ||

- Krishi Parashar tradition (400 BC)

- Vrikshayurveda (c. 1000 AD)

आधुनिक रासायनिक कृषि

**Modern Chemical
Agriculture**

- २०० वर्ष के वसाहतकाल में हमारे कृषि में न भूतो न भविष्यति बदलाव आया।
- आम स्तर पर यह धारणा बनाई गई की भूमि एक आर्थिक स्रोत है जिससे ज्यादा से ज्यादा उत्पादन निकालना उचित होगा।
- स्वतंत्रता के बाद हमारा राष्ट्र खाद्य सुरक्षित नहीं था। खाद्य आपूर्ति के लिए आधुनिक रासायनिक कृषि का सहारा लिया गया।

- 200 years of colonial regime brought an unprecedented change in our agriculture.
- In the colonial regime, Bhumi was just an economic resource to be exploited for maximum production.
- At the time of independence, we were facing acute food shortage. To overcome it, we resorted to modern chemical agriculture.

- अधिक उत्पादन देनेवाली किस्में, रासायनिक खाद और सिंचाई यह आधुनिक रासायनिक कृषि के मुख्य आधार थे।
- गेहूँ और धान के कुछ गिने चने अधिक उपजाऊ किस्में, रासायनिक खाद एवं सिंचाई की मदद से खाद्य उत्पादन और उत्पादकता में बढ़त पाई गई।
- आधुनिक रासायनिक कृषि के कारण हमारा खाद्य उत्पादन चौगुना हुआ जिससे कुछ उपजाऊ राज्य राष्ट्र के धान्यागार हो गए।
- Modern chemical agriculture emphasized on high yielding varieties, chemical fertilizers and irrigation.
- A few high yielding varieties of wheat and rice were used for enhancing our food production and productivity with generous application of chemical fertilizers and irrigation.
- Modern chemical agriculture nearly quadrupled the production of rice and wheat, transforming India's fertile areas into 'granaries'.

- निसंदेह आधुनिक रासायनिक कृषि ने हमें खाद्य असुरक्षितता से बाहर निकाला, लेकिन इस से हमारे कृषि का दूरगामी नुकसान हुआ है।
- आधुनिक रासायनिक कृषि से पाई गई खाद्य सुरक्षा की किमत हमारे प्राकृतिक साधन, पर्यावरण और पारिस्थितिकी की हानी से चुकाई है।
- वर्तमान में भी भारतीय कृषि चिंतन एवं उस में सम्मिलित समग्र विचार को हम ने उपेक्षित रखा है।

- Modern chemical agriculture, no doubt has saved us from food shortage, but it was far from safeguarding our future.
- The achievement has been at the expense of our ecology and environment.
- We have continued modern chemical farming, completely ignoring Bhartiya Krishi Chintan and our holistic approach to farming.

किसानों के रासायनिक कृषि के अनुभव

(भूमि सुपोषण की राष्ट्रीय संगोष्ठी, मार्च २०१८ में प्रलेखित)

Farmer's Experience of Chemical farming

(As documented in National Conference on Bhumi Suposhan, March 2018)

- ज्यादा पानी की जरूरत
- मिट्टी कठिन एवं पानी के लिए अभेद्य होना
- फसल के उत्पादन में घटाव अथवा स्थिरता
- भूमि में स्थित सूक्ष्म जीवाणुओं में घटाव
- भूमि की उर्वरता में घटाव
- भूमि के पोषण तत्वों में घटाव
- फसल के स्वाद और सुगंध में घटाव
- लागत व्यय में बढ़ोतरी

- High water demand
- Soil hardens and becomes impervious
- Decrease or stagnation in crop production
- Noticeable change in micro flora and fauna in the soil
- Gradual decline in soil fertility
- Decline in soil nutrients,
- Decline in taste and aroma of the farm produce, and,
- Increase in input cost

भूमि सुपोषण राष्ट्रीय संगोष्ठी



वर्तमान में भूमि अवनत होने के कारण

(भूमि सुपोषण की राष्ट्रीय संगोष्ठी, मार्च २०१८ में प्रलेखित)

Reasons behind the current land degradation

(As documented in National Conference on Bhumi Suposhan, March 2018)

- थोड़ी सी भी विश्रांती के सिवाय, भूमि की सतत जुताई करना।
- आर्थिक लाभ पर ध्यान रखते हुए केवल एकल फसल पद्धति अपनाना।
- स्थानिक परिस्थिति, कृषि परम्परा एवं वैविध्यता की उपेक्षा करते हुए सभी जगह पर (पूरा तहसील, जिला इत्यादि) समान फसल पैदा करना।
- भूमि की धारण क्षमता को वर्जित फसल उपजाना।
- भूमि सुपोषण की परम्परागत देशीय पद्धति की उपेक्षा।

- Intensive cultivation practices without giving rest to the soil
- Emphasis on commercial monocropping.
- Uniform cropping pattern irrespective of local conditions and biodiversity.
- Cultivating crops out of capacity domain
- Lack of efforts in improving and building on indigenous practices of bhumi suposhan

चिंताजनक स्थिती

Alarming Situation

- ९६.४० दशलक्ष हेक्टेअर भूमि अवनत है, जों की हमारे राष्ट्र के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग ३०% है।¹
- मिट्टी की ऊपरी परत के क्षरण की वार्षिक गति १५.३५ टन प्रति हेक्टेयर है।²
- नत्र, स्फुरद एवं पालाश की सर्वसाधारण उचित मात्रा ४:२:१ है. किंतु वर्तमान में प्रत्यक्ष मात्रा ७:२.४:१ है। पंजाब और हरियाणा में यह मात्रा ३०:८:१ है।³
- इतना होते हुए भी कृषि की उपजाव बढ़ नहीं रही, वह स्थिर हो गई है।
- 120.7 Million hectare land i.e., 36.7% of the total geographic area of our country is suffering from the land degradation.¹
- Annual soil loss rate in our country is about 15.35 tonnes per hectare.²
- The current consumption ratio of nitrogen, phosphorus and potassium (NPK) is 7.2:2.4:1 against their desirable ratio of 4:2:1. In Punjab and Haryana it is as high as 30:8:1.³
- Despite of this, agriculture productivity has stagnated

1, 2 NAAS. 2018. Soil Health: New Policy Initiatives for Farmers. Policy Brief No.3. National Academy of Agricultural Sciences, New Delhi.

3 Ministry of Agriculture And Farmers Welfare. 2016. Impact of Chemical Fertilizers and Pesticides on Agriculture and Allied Sectors in the Country: Twenty Ninth Report, Standing Committee on Agriculture (2015-16), Sixteenth Loksabha. Loksabha Secretariat, New Delhi.

आगामी दिशा

Way Ahead

- स्वतंत्रता के पश्चात भी, पिछले सात दशक भूमि सुपोषण की उपेक्षा ही हुई है।
- अभी उचित समय है की हम भारतीय कृषि चिंतन को एवं भूमि सुपोषण संकल्पना को यथोचित रूप में पुनः स्वीकार करे।
- वर्तमान में भारतीय कृषि को संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिस से हमारी खाद्य सुरक्षा भी जारी रहे एवं भूमि का शोषण भी नहीं हो रहा हो।

- Over the last seven decades, we have digressed from Bhumi Suposhan.
- It is a high time to bring in the paradigm shift.
- We need balanced approach such that food production is not affected but at the same time soil health is not compromised.

- हमें निर्धारित होना है कि वर्तमान में चल रहा भूमि का शोषण मात्र रोखना ही नहीं, बदलना है।
- भूमि माता को उचित सम्मान देना है। उस के अक्षय स्वास्थ्य की ओर चलना है।
- भूमि सुपोषण के संकल्प में मात्र कृषकों का योगदान रहेगा यह अपेक्षा अनूचित है। भूमि सुपोषण यह हमारे राष्ट्र के सभी नागरिकों का उत्तरदायित्व है।
- We have to be determined to change the existing extractive paradigm.
- We should care for the Mother Earth and its delicate health.
- It will be unjust to exclusively ask our farmers to care for Bhumi Suposhan. Bhumi Suposhan is a responsibility of all citizen.

आयोजक संस्था

Alliance of Organizers

गायत्री परिवार, हरिद्वार
पतंजलि योगपीठ
रामकृष्ण मिशन
इंटरनेशनल सोसायटी फॉर
कृष्णा कॉन्शियसनेस
(इस्कॉन)
श्री सिध्दगिरी मठ
श्री रामचन्द्र मिशन
ईशा फाउंडेशन
जियर ट्रस्ट, हैदराबाद

Gayatri Parivar, Haridwar
Patanjali Yogpeeth
Ramkrishna Mission
International Society for
Krishna Consciousness
(ISKCON)
Shri Sidhdhagiri Math
Shri Ramchandra Mission
Isha Foundation
Jeeyar Trust

अक्षय कृषि परिवार
गो आधारित प्रकृति व्यवसाय दारुल संगम
बन्सी गीर गौशाला
गोसेवा गतिविधी
भारतीय किसान संघ
स्वदेशी जागरण मंच
सहकार भारती
वनवासी कल्याण आश्रम
दीन दयाल शोध संस्थान
एकल विद्यालय
लोक भारती
विद्या भारती

Akshay Krishi Parivar
Gau aadharit Prakriti Vyawasay Darul
Sangam
Bansi Gir Gaushala
Gauseva Gatividhi
Bhartiya Kisan Sangh
Swadeshi Jagran Manch
Sahakar Bharati
Vanvasi Kalyan Ashram
Deen Dayal Shodh Sansthan
Ekal Vidyalaya
Lok Bharati
Vidya Bharati

विश्व हिंदू परिषद
ग्रामविकास गतिविधी
राष्ट्रीय सेवा भारती
गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र
कृषि प्रयोग परिवार
एकलव्य फाउंडेशन
गंगा सेवा समिति
ग्राम भारती
यूथ फॉर नेशन
पर्यावरण गतिविधी
प्रज्ञान मिशन
भारत सेवा संघ

Vishwa Hindu Parishad
Gramvikas Gatividhi
Rashtriya Seva Bharati
Go Vidnyan Anusandhan Kendra
Krishi Prayog Parivar
Eklavya Foundation
Ganga Seva Samiti
Gram Bharati
Youth for Nation
Paryavaran Gatividhi
Prajnana Mission
Bharat Seva Sangh

जन अभियान के मुख्य
बिंदु

Key Points of the Jan
Abhiyan

अभियान का उद्देश्य भारतीय कृषि चिंतन, भूमि सुपोषण एवं संरक्षण इन संकल्पनाओं को कृषि क्षेत्र में पुनःस्थापित करना यह है।

जन अभियान में प्राधान्यतः कृती, जन जागरण एवं कृषिनीति के संदर्भ में भारतीय कृषि चिंतन एवं भूमि सुपोषण को बढ़ावा देना यह कार्यक्रम होंगे।

The Jan Abhiyan is a first step towards reinstating holistic Bhartiya Krishi Chintan and the Bhumi Suposhan concept.

This multi-dimensional Abhiyan will comprise of action, awareness generation and policy advocacy on Bhartiya Krishi Chintan and Bhumi Suposhan.

जन अभियान के प्रथम चरण का कालावधि तीन माह होगा। जन अभियान का प्रारंभ चैत्र शुद्ध प्रतिपदा के पावन अवसर पर (१३ अप्रैल २०२१, मंगलवार) को होगा और समापन आषाढ़ शुद्ध पूर्णिमा (२४ जुलाई २०२१, शुक्रवार) को होगा।

भूमि सुपोषण एवं संरक्षण यह सभी भारतीयों का उत्तरदायित्व है। परिणामतः यह जन अभियान ग्रामों में और नगरों में भी कार्यान्वित होगा।

The initial phase of three months will start on auspicious Chaitra Pratipada (13th April 2021, Tuesday) and conclude on Ashadh Purnima (23rd July 2021, Friday).

Bhumi Suposhan is a responsibility of every citizen. Therefore, it will be conducted in villages and cities alike, all over the country.

सुझावित गतिविधियाँ

Suggested actions

अधिकाधिक ग्रामों में भूमि पूजन उत्सवों का आयोजन।

प्राकृतिक, परंपरागत पद्धति द्वारा भूमि को सुपोषित रखने वाले किसानों का सम्मान करना एवं अनुभव कथन आदि कार्यक्रमों का आयोजन।

ग्राम के भूमि का विस्तृत मानचित्र बनाना जिसमें विभिन्न प्रकारकी भूमि, समतल ढलान वाली, रंग अनुसार, गहराई अनुसार वर्णन करना।

भूमि आरोग्य और फसल चक्र के संदर्भ में किसानों से परिचर्चा हो।

गाँव परिसर के भूमि पूजन संबंधित उत्सव, त्यौहार, गीतों का संकलन आदि का आयोजन करे।

Organizing Bhoomi Poojan festival in maximum possible villages.

Felicitate farmers successfully practicing Bhumi Suposhan and organize farmer's interaction with them

To make a detailed soil map of the village, in which different types of soils, their colour, slope and depth are depicted.

Group discussion with farmers on soil health and crop cycle.

Documentation of Bhumi related traditions, rituals, folk songs etc.

छोटे हस्तचालित, पशुचालित यंत्र प्रदर्शनी आदि आयोजित करे।

कृषि महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों में किसान वैज्ञानिक तथा कृषि वैज्ञानिकों के साथ वार्तालाप का आयोजन हो।

भूमि आरोग्य, सुपोषण संबंधित विचार गोष्ठी, वैज्ञानिक चर्चा सत्र आदि का आयोजन हो।

कृषि विज्ञान केंद्र में भूमि सुपोषण संबंधित चर्चासत्र आयोजित हो।

नगरीय क्षेत्रों में प्राकृतिक पद्धति द्वारा निर्मित कृषि उपज की विक्री की व्यवस्था हो।

Organize exhibition of hand operated and animal operated farm implements.

Interactive programmes for students at agricultural colleges and universities, with farmer scientist and agriculture scientists.

Organize seminars, scientific workshops, on Bhumi Suposhan, Soil Health etc.

Krishi Vigyan Kendra should organize workshops on Bhumi Suposhan

In urban areas, organize a system of sale of agricultural produce produced by natural, nonchemical method.

सभी जगह, खास तौर पर नगर विभागों में जैविक एवं अजैविक अपशिष्ट पदार्थों का सुयोग्य व्यवस्थापन करें।

जैविक एवं अजैविक अवशेष जहा पर उनकी निर्मिती हो रही हो वही अलग करे।

जैविक अवशेष जैसे कि रसोई मे निर्मित कूड़ा -कचरा जैसे की सब्जी की डंडियां, बागानों का खरपतवार, होटल के रसोई इत्यादि, से कम्पोस्ट खाद तैयार किया जा सकता है।

Appropriate management of biodegradable and nonbiodegradable waste, especially in urban areas.

Segregate biodegradable and nondegradable waste at source i.e., where it is generated.

Biodegradable waste for example, kitchen waste, weeds from home gardens etc. can be converted into compost.

अजैविक अवशेषों को , जैसे कि प्लास्टिक, थर्मोकॉल, सीमेंट के उत्पादन जो विघटित होने का कोई निश्चित कालावधि नहीं है, पुनःउपयोग हेतु योग्य व्यवस्था को सौंप दिया जाए। अजैविक अवशेष को यों ही इधर-उधर फेंकना मिट्टी के लिए हानिकारक है।

भूमि का अवक्रमण रोकने के लिए एवं मिट्टी का क्षरण रोकने के लिए वृक्षारोपण अत्यावश्यक है। इसलिए, जहाँ भी संभव हो, वहाँ वृक्षारोपण किया जाए।

Nonbiodegradable waste like thermocol, plastic and cement products that take indeterminate time for degradation, should be put into appropriate recycling facility. Dumping them anywhere is harmful for the soil.

Plantations, afforestation are important to check land degradation. Conduct afforestation, plantation at all possible places.

अधिक जानकारी हेतु संपर्क

Contact for more information

**भूमि सुपोषण एवं संरक्षण हेतु राष्ट्र-
स्तरीय जन अभियान कार्यालय**

सेवा श्री, प्रथम तल, बीडी ३७, गली
नं. १४, फैज रोड, करोल बाग, नई
दिल्ली ११०००५

ई मेल: bhumi.suposhan@gmail.com

**Office of National level Jan Abhiyan
on Bhumi Suposhan and Samrakshan**

Seva Shri, First Floor, BD 37, Lane
Number 14, Faiz Road, Karol Bagh,
New Delhi. 110005

Email: bhumi.suposhan@gmail.com